राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता महासम्मेलन

सार्वदेशिक मुख्यालय में जैसे ही स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में स्वामी अग्निवेश जी ने अपनी सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियों के साथ 28 फरवरी 2005 को प्रवेश किया तो उन सभी शक्तियों पर गाज गिरी जो तिकड़मबाजी के बल पर वर्षों से प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं पर कब्जा किये बैठी थीं। विशेषकर आर्य समाज में सफल घुसपैठ कर चुके संघी तत्वों को तो अपना ताश का महल बिखरता नज़र आया, उनके मंसूबे धरे के धरे रह गये और हौसले पस्त हुए। वे खुल कर सामने नहीं आना चाहते थे लेकिन तिकड़मबाज लोग भी इंतजार करो और देखो की नीति अपनाते नज़र आये। दिल्ली हाई कोर्ट में चल रहे मुकदमे के कारण न तो प्रतिनिधि सभाएँ खुल कर विरोध में आईं और न समर्थन में उतरीं। इस ठहराव ने संघी तत्वों को हताश और निराश किया। इस प्रकार दिल्ली हाई कोर्ट में डाले गये मुकदमे का जितना नुकसान वधावन गुट को हो रहा था उससे कहीं अधिक लाभ स्वामी अग्निवेश को मिल रहा था। वधावन और बंसल की पुरजोर कोशिश रही कि फैसला जल्दी आ जाये लेकिन स्वामी जी का चुनाव एस.डी.एम. की उपस्थिति में विधिवत रूप से हुआ था और दिल्ली के रजिस्ट्रार आफ सोसायटीज ने चुने गये अधिकारियों को प्रमाणित किया हुआ था इसलिए इस पेंच के कारण फैसला जल्दी होने की कोई सम्भावना नहीं थी। बाद में वधावन और कैप्टन देवरत्न की आपस में ठन जाने और उनकी सार्वदेशिक का विभाजन होने से उनके पक्ष में अदालत का फैसला आने की रही- सही सम्भावना भी खत्म हो गई। तीन साल में श्री वधावन को कोर्ट से किसी प्रकार की अन्तरिम राहत का न मिलना स्पष्टतः संकेत दे रहा था कि शुरू दिन से कोर्ट वधावन के दावों को पुष्ट नहीं मान रही थी। बार-बार चुनावों को कोर्ट में चुनौती मिलने से यह बात तो कोर्ट की नज़र में भी आ गई थी कि इन चुनावों में धांधली होती रही है अतः वह बिना किसी ठोस नतीजे पर पहुँचे फैसला देने की जल्दी में नहीं थी। वधावन और कैप्टन में फूट पड़ जाने से और उनके एक दूसरे पर लगाये गये आरोपों-प्रत्यारोपों से इन दोनों पक्षों की आर्य समाज में किरकिरी होने लगी और स्वामी अग्निवेश के पक्ष में वातावरण बनने लगा। स्वामी अग्निवेश जी की नीति प्रारम्भ से ही यह रही कि सभी पक्ष मिल कर आर्य समाज को आगे बढ़ायें। इस निमित्त वे खुद अपनी पहल पर श्री विमल वधावन और श्री रामफल बंसल से मिलने उनके चैम्बरों में गये। लेकिन इन दोनों वकीलों को एक संन्यासी की ईमानदारी व उदारता पर विश्वास नहीं था अदालत के फैसले पर विश्वास था। उन्हें चिंता आर्य समाज की नहीं अपनी पद-बहाली और स्वार्थों की थी। उन्होंने स्वामी जी की पहल को उनकी कायरता समझा शिष्टता और विनम्रता नहीं। स्वामी अग्निवेश जी ने ऐसी ही पहल कैप्टन देवरत्न आर्य से मिलने में दिखाई जब वे दिल्ली पधारे। उनके व्यवहार में कुछ लचीलापन था, समझौता कर लेना चाहते थे लेकिन जिन लोगों प्रकाश आर्य, विनय आर्य, धर्मपाल, राजसिंह आर्य से वे घिरे हुए थे वे कोर्ट के फैसले का इंतजार करने के लिए उन्हें तैयार कर रहे थे सो बात सिरे नहीं चढ़ी। स्वामी जी की पहल की ये दो घटनाएँ श्री विमल वधावन और कैप्टन देवरत्न के ग्रुप में एक दूसरे के विरुद्ध इस शक को जन्म दे गई कि स्वामी जी दोनों को दाना फेंक रहे हैं और जो भी दाना चुगेगा उनका कैदी बन जायेगा। इस शक ने जहाँ वधावन और कैप्टन के बीच की दूरियों को बढ़ाया वहां स्वामी अग्निवेश जी के एकता प्रयासों को भी धक्का पहुँचाया। स्वार्थी लोग ऐसी फिजां तैयार करने में सक्रिय थे कि इन तीन धड़ों में मेल-मिलाप न हो पाये और स्थिति अनिर्णीत, असमंजस, खींचतान की बनी रहे। विशेषतः संघी तत्व इस दिशा में अधिक सक्रिय हुए। जिन प्रान्तों में दो-दो धड़े आमने सामने खड़े थे वहां की प्रतिनिधि सभाएं भी यही चाहती थीं कि ये पेंच फंसा रहना चाहिए नहीं तो उनकी सत्ता को भी चुनौती मिल कर रहेगी।

ऐसे अनिष्टकारी और अस्पष्ट वातावरण को खत्म करने के लिए यह आवश्यक समझा गया कि दिल्ली में राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता महासम्मेलन आयोजित करके शक्ति-प्रदर्शन किया जाये जिससे तटस्थ रहने वाली ताकतें अपनी मानसिकता बदल सकें, अपने निर्णय पर पुनर्विचार कर सकें और आर्य समाज की मुख्यधारा में समाहित होकर ऋषि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ा सकें। महासम्मेलन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना भी था कि स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व में सार्वदेशिक सभा का भावी कार्यक्रम क्या होगा। फलतः 22-23 मई 2005 को नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में एक विशाल महासम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें लगभग पांच हजार की उपस्थिति दर्ज रही।

सिरपर केसरिया साफा, गले में गायत्री मन्त्र का पटका, शरीर पर ओ३म से अंकित रेशमी वस्त्र पहने आर्य नर-नारियों की टोलियाँ जब स्वामी दयानन्द की जय, आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलते रहे, ओ३म का झंडा ऊँचा रहे के जयकारे लगाते हुए और बुद्धिवाद का करो विकास, पढ़ो मित्र सत्यार्थ प्रकाश का समाघोष लगाते गगन को गुंजाते तालकटोरा स्टेडियम की ओर बढ़ते नज़र आये तो दर्शकों ने अनुमान लगा लिया था कि आर्य समाज का भविष्य स्वामी अग्निवेश के हाथ में ही सुरक्षित है। नेताओं व कार्यकर्त्ताओं, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों व ब्रह्मचारणियों, दर्शकों व श्रोताओं, आर्य भाई व बहनों, बुजुर्गों व युवाओं के मणि-कांचन योग ने तालकटोरा स्टेडियम में एक ऐसा उत्साह जनक वातावरण तैयार कर दिया था कि जैसे कुछ कहने-सुनने को रहा ही न था, स्पष्ट दीख रहा था कि आर्य समाज का झुकाव किस ओर है। 22 मई को आर्य विदुषी वेदाचार्य डॉ. निष्ठा विद्यालंकार और 23 मई को धर्माचार्य श्री अमरदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ का कार्य सम्पन्न हुआ जिसमें प्रमुख यजमान बने- (1) चौ. सूरजमल (गुडगांव), (2) श्री सुरेन्द्र एडवोकेट एवं श्रीमती निर्मला चौधरी (गुडगांव), (3) श्री श्याम ग्रोवर (योजना विहार, दिल्ली), (4) डॉ. शैलेश कुमार द्विवेदी (गीता कालोनी, दिल्ली), (5) श्री राजपाल शास्त्री, (6) श्री संजय शर्मा, (7) श्रीमती सरला दुग्गल, (8) श्री ओमप्रकाश मल्होत्रा, (9) श्री नरेन्द्र कुमार नागपाल, (10) श्रीमती सरला सहगल (सभी पश्चिमी पटेल नगर, नई दिल्ली) और श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री। विदुषी डॉ. बुद्धिराजा का प्रवचन प्रभावशाली रहा। यजमानों को स्वामी अग्निवेश ने आशीर्वाद प्रदान किया और प्रो. कैलाशनाथ सिंह का संक्षिप्त उद्‌बोधन हुआ। तत्पश्चात सभा उपप्रधान श्री जगवीर सिंह के नेतृत्व में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्याक्ष चौ. मित्रसेन आर्य ने ओ३म ध्वज फहराया।

इस दो दिवसीय महासम्मेलन में पहले दिन अध्यात्म जागरण सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने की और संचालन प्रो. कैलाशनाथ सिंह ने किया। मुख्य विषय वैदिक एकेश्वरावाद था। सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी, अल्पसंख्यक आयोग (शिक्षा प्रकोष्ठ) के सदस्य रे. वाल्सन थम्पू, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री बलबीर सिंह चौहान, आर्य प्रतिनिधि सभा, महाराष्ट्र के प्रधान आचार्य सुभाष ने भी अपने विचार रखे। वीरांगना पुष्पा शास्त्री (रेवाडी) ने भजन, संगीत, भाषण के माध्यम से देश की वर्तमान परिस्थितियों पर प्रभावोत्पादक प्रकाश डाला। स्वामी अग्निवेश जी ने वैदिक एकेश्वरवाद सम्बंधी प्रस्ताव इस अवसर पर पारित कराया।

जाति तोड़ो समाज जोड़ों एवं साम्प्रदायिकता सद्‌भाव सम्मेलन उत्तर प्रदेश के गन्ना राज्य मंत्री स्वामी ओमवेश की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। स्वामी अग्निवेश, मुख्य अतिथि सांसद सचिन पायलट, प्रो. कैलाशनाथ सिंह, प्रो. विट्‌ठलराव (मन्त्री आ.प्र. सभा आन्ध्र प्रदेश), श्री सत्यपाल (आई.जी. मुम्बई), श्री धर्मबन्धु (प्रांसला, गुजरात), श्री राममोहनराय एडवोकेट (पानीपत), श्री मामचन्द रेवाड़िया (दिल्ली), डॉ. प्राची आर्या (हरिद्वार), श्री आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र मन्त्री उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा (उड़ीसा), पूर्व विधायक राजेन्द्र सिंह बीसला (फरीदाबाद) ने इस सम्मेलन को सम्बोधित किया। सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी ने इस सम्मेलन का संचालन किया।

भारतीय भाषाएँ लाओ, अंग्रेजी हटाओ एवं नशाबंदी सम्मेलन स्वामी वरुणवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसे प्रो. शेर सिंह, स्वामी ब्रह्मवेश, महेन्द्र, शास्त्री, डॉ. कमल नारायण (छत्तीसगढ़), डॉ. सुभाष वेदालंकार (जयपुर), आचार्य प्रणव प्रकाश शास्त्री (दिल्ली), आचार्य अमरदेव शास्त्री (दिल्ली), श्रीमती शशि आर्या, आशुकवि श्री विजय गुप्त, श्यामलाल आर्य ने सम्बोधित किया। श्री सत्यव्रत सामवेदी, स्वामी वरुणवेश, स्वामी अग्निवेश ने और मंच संचालन करते हुए डॉ. धर्मपाल आर्य, पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी ने भी अपने सारगर्भित विचार रखे।

कन्या भ्रूण हत्या विरोधी एवं पाखण्ड-खण्डन सम्मेलन प्रसिद्ध गांधीवादी नेत्री सुश्री निर्मला देशपाण्डेय (सदस्य राज्य सभा) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डॉ. वेदप्रताप वैदिक, बहन कलावती, श्रीमती अमृता निकोर नई दिल्ली, श्री अश्विनी कुमार शर्मा, एडवोकेट (जालंधर), श्री राजकुमार साहनी (जयपुर) ने सम्मेलन को सम्बोधित किया। मंच संचालन श्री राम सिंह आर्य (जोधपुर) ने किया। श्री ईश्वर दयालु आर्य के संयोजन में कन्या जीवन दायिनी समिति, देहरादून की टीम ने कन्या भ्रूण हत्या सम्बन्धी एक नाटक का मंचन भी इस अवसर पर किया जो बहुत ही हृदयस्पर्शी था।

आर्य राष्ट्र निर्माण एवं भ्रष्टाचार विरोधी सम्मेलन स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन को सम्बोधित करने वाले वक्ता थे सर्वश्री स्वामी इन्द्रवेश, सत्यव्रत सामवेदी, डॉ. रामप्रकाश, सेवाराम पटेल (मध्य प्रदेश), सत्येन्द्र चन्द्र गुड़िया (उत्तरांचल), ओमप्रकाश आर्य (अमृतसर), लक्ष्मीनारायण भार्गव (मध्य प्रदेश), राजपाल शास्त्री (दिल्ली), रामधारी शास्त्री (जीन्द, हरियाणा), आचार्य हरिदेव (दिल्ली) और प्रो. यशवीर (नई दिल्ली)। सम्मेलन के मुख्य अतिथि हरियाणा के मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने भी सम्मेलन को सम्बोधित किया। स्वामी अग्निवेश का भाषण अत्यंत मार्मिक और प्रभावशाली रहा। प्रो. कैलाशनाथ सिंह ने मंच संचालन किया।

इस आर्य महासम्मेलन में जातिवाद, साम्प्रदायिकता, पाखण्ड, शोषण, अंग्रेजी, नशाखारी, कन्या भ्रूण हत्या, भ्रष्टाचार विरोधी तथा आर्य राष्ट्र निर्माण सम्बंधी छह प्रस्ताव भी इस अवसर पर पारित कर आर्य समाज का आह्वान किया कि वह इनके लिए संघर्ष करने का तैयार हो। सार्वदेशिक सभा ने इस अवसर पर संकल्प लिया कि वह सप्त-क्रान्ति के मुद्दों को लेकर आर्य समाज को एक नया आयाम देने का प्रयास करेगी।

राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता महासम्मेलन में दीर्घकालीन आर्य समाज की सेवाओं के लिए 24 विद्वानों को आर्यरत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया। इन विद्वानों को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये। सभी अभिनन्दित विद्वानों का संक्षिप्त परिचय सभा मंत्री प्रो. कैलाशनाथ सिंह ने दिया तथा श्री स्वामी इन्द्रवेश जी ने आशीर्वाद प्रदान किया। सम्मानित विद्वानों की सूची इस प्रकार है-

(1) डॉ. सत्यपाल सिंह (मुम्बई)
(2) डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण (दिल्ली)
(3) आचार्य डॉ. सुभाष (उस्मानाबाद, महाराष्ट्र)
(4) आचार्य डॉ. जयदत्त उप्रेती (अल्मोडा, उत्तरांचल)
(5) आचार्य श्री राजपाल सिंह शास्त्री (मधुर प्रकाशन, दिल्ली)
(6) आचार्य डॉ. जयदेव विद्यालंकार (गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)
(7) डॉ. वेदप्रताप वैदिक (दिल्ली)
(8) पं. वीरेन्द्र कुमार पंडा (उड़ीसा)
(9) आचार्या राजन मान (गुरुकुल लोवाकलां, बहादुरगढ़, हरियाणा)
(10) आचार्य राजकिशोर होता (उड़ीसा)
(11) डॉ. वरुणमुनि वानप्रस्थ (कोटा, राजस्थान)
(12) आचार्या अमृता निकोर (कालकाजी, नई दिल्ली)
(13) डॉ. रामप्रकाश (कुरुक्षेत्र)
(14) डॉ. राजबुद्धिराजा (दिल्ली)
(15) स्वामी धर्मबन्धु (गुजरात)
(16) आचार्य हरिदेव (गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली)
(17) आचार्य जयराम त्यागी (कानपुर)
(18) प्रिं. शकुन्तला आर्या (कन्या गुरुकुल खानपुर, हरियाणा)
(19) श्रीमती वेदवती आर्या (नजफगढ़, दिल्ली)
(20) पं. देवनारायण भारद्वाज (अलीगढ़),
(21) श्री शोभाराम प्रेमी (मेरठ)
(22) सुश्री कमला स्नातिका (गुरुकुल सासनी, हाथरस)

(23) आचार्य रमेशचन्द्र शास्त्री (फरीदाबाद)

(24) वैद्य मंगलदेव जी (मन्दसौर, मध्य प्रदेश)

श्री अनिल आर्य के संयोजन में गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियों ने लाठी, जूड़ो, कराटे का विशेष प्रदर्शन भी इस अवसर पर किया और योगासनों के माध्यम से जनता को मन्त्र मुग्ध किया। सम्मेलन की व्यवस्था को सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के सैंकड़ों कार्यकर्ताओं ने आचार्य जयवीर, श्री बिरजानन्द व जगवीर सिंह के नेतृत्व में कुशलता के साथ सम्भला।